व्यंग्य एवं चंद अन्य रचनाएं

रविशंकर श्रीवास्तव

1 लघुकथा

नज़रिया

घर में सबसे बड़ा लड़का था जमाली । जब उसका पिता बीमार रहने लगा तो जाने अनजाने ही उसके कंधे पर उसके परिवार का बोझ आ गया । उसके छोटे भाई पढ़–लिख कर कुछ बन जाएं , ऐसा सोचकर वह उन पर थोड़ी सख्ती करता और मौके पर मारता । उसकी मां जमाली पर चिल्लाती – तेरा बाप बीमार है और कुछ कहता नहीं इसलिए तू अपने छोटे भाइयों को जबरन मारता है।

कुछ दिनों के बाद जमाली के पिता की मृत्यु हो गई। जमाली के लिए उसके भाइयों का कैरियर और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया । उन पर उसकी सख्ती और बढ़ गई । लोग कहते – जमाली का बाप मर गया तो वह अपने भाइयों पर भारी अत्याचार करता है ।

परिस्थितियां ऐसी बनीं कि जमाली को शादी करना पड़ी। पर वह अपने भाइयों का कैरियर नहीं भूला और अपनी पत्नी को भी भाइयों को पढाने में लगा दिया। नाते रिश्तेदार कहते – जमाली अपनी बीवी के कहने में आ गया है, उसका गुलाम बन गया है और इसलिए वो अपनी बीवी के साथ मिलकर अपने भाइयों पर अत्याचार करता है।

जमाली की सख्ती और उसके भाइयों की मेहनत रंग लाई और वे दूर शहरों में अच्छी नौकरियों में लग गए। लोगों ने जमाली को कोसा –

जमाली बड़ा बेदर्दी है । उसने बीमार अपाहिज मां को उनके बेटों से दूर कर दिया । उसकी निगाह तो पुश्तैनी जायदाद पर लगी है।

और हर बार जमाली परवरदिगार की ओर नजरें फेंक कर दुआ मांगता – या खुदा – मुझे तेरे नजरिये की परवाह है । तू अपने करम मुझपे मेहरबां रखना।

2 हास्य लघु कथा

गति सीमा

उस आदमी ने नई मारूति एस्टीम कार खरीदी थी, और शौक में निकल पड़ा था हाइवे में ड्राइव का मजा लेने। कार नई थी, नया नया शौक था, अतः वह उसे जरा ज्यादा ही तेजी से चला रहा था। थोड़ी ही देर में पुलिस के गश्ती वाहन ने तेजी से, और गति सीमा से ज्यादा तेज वाहन चलते देख उसे रूकने का इशारा किया। मगर उसने सोचा– मेरी नई मारूति एस्टीम का पीछा वे पुलसिए अपनी खटारा जीप से क्या खाक कर पाएंगे। अतः वह और भी तेजी से अपनी गाड़ी भगाने लगा।

मगर ऐसा लगता था कि पुलिस वाले भी उसे हाथ से जाने देना नहीं चाहते थे। अतः वे भी उसी तेजी से लगे रहे। अंततः उस आदमी ने सोचा कि अपनी नई गाड़ी को अंधाधुंध चला कर कहीं ठोकने के बजाए पुलिस को समर्पण करना ही उचित होगा। उसने अपनी गाड़ी धीमी की और किनारे लगा दी।

इंसपेक्टर गुस्से से उबलता हुआ आया और देखा कि गाड़ी नई है और चालक भी संभ्रांत और शौकीन। उसे किसी अपराध और स्मगलिंग इत्यादि के आसार भी नहीं दिखे तो उसने कहा– ‘‘ अब जरा जल्दी से अपनी गाड़ी तेज चलाने और रूकने का इशारा करने पर भी नहीं रूकने के बारे में एक अच्छी सी सफाई पेश कर दो नहीं तो तुम और तुम्हारी नई गाड़ी दोनों को लाकअप में बंद कर दूंगा।‘‘

उस आदमी ने बिना अटके उत्तर दिया– जनाब मेरी बीबी पिछले हफ्ते से खो गई है और मैंने समझा कि आपने उसे ढूंढ लिया है और मुझे वापस देने जा रहे हैं।

नई गाड़ी के लिए ढेरों बधाइयां, जाओ मौज करो– इंसपेक्टर ने कहा।

3 हास्य लघु कथा

स्कूल

एक सुबह एक मां अपने बेटे को स्कूल भेजने में भारी मशक्कत कर रही थी।

बेटे ने कहा– स्कूल में कोई भी मुझे पसंद नहीं करता।

स्कूल के शिक्षक मुझे पसंद नहीं करते, बच्चे मुझे दूर से छेड़ते हैं, स्कूल बस का ड्रायवर मुझसे घृणा करता है, स्कूल का सुपरिंटेंडेट चाहता है कि मैं दूसरे किसी अन्य स्कूल में चला जाउं और तो और स्कूल के नोटिस बोर्ड में भी मेरे खिलाफ बातें लिखी रहती हैं। मैं स्कूल नहीं जाउंगा।

मां ने कुछ इस तरह समझाया–

पर बेटे, तुम्हें स्कूल जाना चाहिए। तुम स्वस्थ हो, तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है, लोगों को अभी बहुत कुछ सिखाना है, तुममें नेतृत्व है। और फिर अभी तुम्हारी उमर ही क्या है, बमुश्किल चालीस के हुए हो अभी तो पूरी जिंदगी पड़ी है। और सबसे बड़ी बात तुम स्कूल के प्रिंसिपल हो और तुम्हीं स्कूल नहीं जाना चाहते।

4 व्यंग्य

नए संकल्प नए साल के

हम सभी प्रायः नए साल में नए नए संकल्प लेते रहते हैं। यह अब एक जुदा बात है कि उन संकल्पों को हम भला कितना निभा पाते हैं। हम संकल्प लेते हैं कि नए साल में हम कुछ व्यायाम करके अपने कमर के घेरे को कुछ कम करें। पर होता यह है कि हम दूसरे दिन से ही व्यायाम के समय में रजाई ओढ़े पड़े रहते हैं और कमर का घेरा कुछ कम होने के बजाए प्रगति की रफ्तार पकड़े ही रहता है। हम संकल्प लेते हैं कि नए साल में सत्य का ही सहारा लेंगे पर होता यह है कि नए साल की अलसुबह जब हमारा पड़ोसी अखबार मांगता है तो हम कहते हैं कि अभी तो आया है जरा हेडलाइन में निगाह मारकर भेजते हैं, और फिर जब सारा अखबार चाट लेते हैं तो फिर उस रद्दी को एहसान जताते हुए देते हैं। हम संकल्प लेते हैं कि आने वाले नए साल में या तो चाय पीनी कम करेंगे या पान खाना छोड़ देंगे, पर हो यह जाता है कि जब भी हम इन्हें छोड़ने के बारे में गंभीरता से सोचते हैं उतनी ही गंभीरता से हमें इनकी तलब लग जाती है और हम किसी और समय के लिए अपना संकल्प भूल जाने की कोशिश करते हैं।

जब हम अपना संकल्प भूल जाने के लिए संकल्पित होते हैं तो फिर ऐसे संकल्पों को धारण करने के बजाए क्यों न हम कुछ ऐसे संकल्प लें जिन्हें निभाने में तो आनन्द आए ही, हम उन संकल्पों को बार बार निभाने के लिए प्रेरित होवें? मैंने अबकी दफा कुछ ऐसे ही संकल्पों को तलाशा जिनमें कि इन संकल्पों को निभाने में बड़ा आनंद आए। आइए आपको कुछ ऐसे ही संकल्पों के बारे मे बताते हैं, जिन्हें निभाने में हम सबको मजा भी आए और कोई अतिरिक्त मेहनत भी न करनी पड़े।

ऐसे कुछ संकल्प हो सकते हैं जैसे कि नए साल में बोरियत भगाने के लिए हम कोई नया व्यसन पाल लें। जैसे कि यदि हम चाय नहीं पीते हों तो चाय पीना शुरू करें और चाय पी ही रहे हों तो काफी या बियर शुरू करें। अब तक अगर

हमने सौंफ पर गुजारा किया हो तो पान–गुटखा पर जाने की कोशिश करें और अगर पहले से पान–गुटखा चल ही रहा हो तो फिर थोड़ा सा अपग्रेडेशन तो अपने व्यसन में किया जाना ही चाहिए जैसे मेंड्रेक्स, कोकीन और हीरोइन इत्यादि। अब बताइये अगर हम ऐसा कोई संकल्प ले लेते तो क्या उसे दिल से निभा नहीं पाते ?

इस साल की नई सुबह के लिए मैंने संकल्प लिया कि सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करने के कष्टप्रद प्रयास को तजकर आराम से दस–बीस मिनट जरा ज्यादा ही सोया जाए। और आप विश्वास करें, इस संकल्प को निभाने में हर रोज मजा तो आता ही है, यह संकल्प आज तक नहीं टूटा और आगे भी टूटने की संभावना नजर नहीं दूर–दूर तक नजर नहीं आती है। मैंने अपने एक मित्र को, जो खाने पीने का भारी शौकीन था, सलाह दी कि वह अपने तोंद के घेरे की चिंता छोड़ यह संकल्प ले कि खूब खाए–पीए और थोड़ा भारी होकर सुमो कुश्ती के लिए ट्राई करे। उसे यह भारी विचार भारी पसंद आया। अब उसे किसी बात की चिंता नहीं है, वह अपने नए संकल्प को निभाने में भारी संकल्पित है और रसगुल्ले के हर कौर पर मुझे भारी हार्दिक धन्यवाद देता है।

जरा सोचिए कि अगर आप नए साल के लिए यह संकल्प लेते कि इस साल टीवी पर नित्य नए प्रोग्राम देखें तो आपका यह संकल्प आराम से पूरा हो जाता। आप जीवन के व्यर्थ के भागदौड़ को तज कर कोई बड़ा सा 29 इंची टीवी ले आते और और फिर सोफे में धंस कर जी–भरकर चैनल सर्फिंग का आनंद लेते। इस संकल्प को निभाने में आपको न तो कोई प्रयास करना पड़ता और न ही आपको अपना जी कड़ा करना पड़ता और इसके विपरीत इस संकल्प को निभाने में आपको छप्पर फाड़कर आनंद आता। और कौन जाने आपकी तकदीर कभी साथ दे जाए तो किसी टीवी चैनल का कोई जैकपॉट हाथ लग जाए और कोई सड़ा सा दस करोड़ का सवाल आपको करोड़पति बना दे।

उम्मीद है कि ये नए प्रकार के संकल्प हमारे नए साल को ज्यादा खुशनुमा बनाएंगे। इन नए संकल्पों की ये सूची तो इंगित मात्र हैं, आप अपनी स्वयं की पसंदीदा सूची तैयार कर सकते हैं जिन्हें निभाने में हर साल साल दर साल आपको

आनंद आए और ऐसा कोई संकल्प टूटे नहीं।

5 व्यंग्य

हाय! मैं मर जाउँ..., क्या सचमुच?

कभी कभी आपके वो आप पर जरा ज्यादा ही प्यार उंडेलने लगते हैं। और कुछ ऐसी प्रेम भरी बातें कहते हैं, जो आपने उनके मुख से कभी सुनी नहीं होती हैं। और आप सोचती हैं कि हाय! क्या सचमुच? पर क्या आपने सोचा है कि आपके वो जो कहते हैं, क्या वो वास्तव में वही कहना चाहते हैं? शायद हां और शायद ना। हो सकता है आपके वो जो कभी कुछ कहते हैं, वो वास्तव में कहना नहीं चाहते हों। और वो जो कहना चाहते हैं, वो नहीं कहते हों। अगर आप गंभीरता से सोचें तो वो जो कहते हैं, उनमें वो जो कहना चाहते हैं, वो छुपा रहता है। बस, जरा सा आइडिया भिड़ाइए और देखिए कि उनके प्रेम भरे शब्द जाल के निहितार्थ भला क्या क्या हो सकते हैं! कुछ ऐसे ही उदाहरण आपके सामने हैं, जिनमें जो वो कहना चाहते हैं, और जो वो कहते हैं उनका खुलासा करने की कोशिश की गई है।

जब वे कहते हैं **''प्रिये, आज क्या मैं खाना बनाने में तुम्हारी मदद कर दूं?''** दरअसल वे कहना चाहते हैं– **''खाना आखिरकार अभी तक क्यों नहीं बना?''**

आपके किसी प्रश्न पर जब वो कहते हैं **''यार इसके पीछे लंबी चौड़ी कहानी है।''** दरअसल वे कहना चाहते हैं– **''मुझे इस बारे में कतई कुछ भी नहीं पता।''**

जब वो कहते हैं **''प्रिये, जरा आराम कर लो, ये क्या... दिन भर काम ही काम?''** दरअसल वे कहना चाहते हैं– **''यार जरा अपनी सिलाई मशीन चलाना बंद करो, मैं अपने पसंदीदा टीवी प्रोग्राम का आनंद नहीं ले पा रहा हूं।''**

क्या आपने अंदाजा लगाया है कि आपकी किसी लंबी चर्चा पर जब वो यह कहते हैं कि ''**वाह यार क्या मजेदार बात बताई।**'' दरअसल वे कहना चाहते हैं– ''**यार अब बस बंद करो। मुझे जरा आज का अखबार तो शांति से पढ़ लेने दो।**''

किसी इमोशनल फिल्म के अंत में, आपकी आंसुओं के बीच जब वो यह कहते हैं ''**वाह क्या शानदार फिल्म थी।**'' तब अक्सर उसका यह मतलब होता है ''**इस फिल्म ने मुझे अपने क्लब के होने जा रहे क्रिकेट मैच की तैयारियों के बारे में सोचने का खासा मौका दे दिया।**''

जब वो कहते हैं, ''**माफ करना यार, मैं आजकल जरा ज्यादा ही भूलने लगा हूं।**'' तब इसका असली अर्थ क्या होता है यह आपको पता है? असल में वो ये कहना चाहते हैं– ''**मैं अपने क्लब के मैच के दिन को नहीं भूलता, ब्रिज के पत्तों को नहीं भूलता, साली साहिबा के सालगिरह को नहीं भूलता पर तुम्हारे जन्म दिन को भूल जाता हूं।**''

''**प्रिये, आज मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था और देखो तुम्हारे लिए यह साड़ी ले आया।**'' जब वे यह कहें, तो आप को उनकी ईमानदारी पर शक करने का कोई अधिकार नहीं है, मगर अक्सर ऐसे मौकों पर इसका अर्थ कुछ यों होता है– ''**सुपर मार्केट में साड़ी दिखाने वाली सेल्स गर्ल क्या कयामत थी। अब अगर मैं कुछ न लेता तो उसकी तो तौहीन थी ना।**''

जब वो यह कहते हैं– ''**कुछ खास नहीं यार, बस जरा सा कट लग गया।**'' तब इसका मतलब होता है, ''**ककड़ी काटते काटते ऐश्वर्या राय के बारे में दिवा स्वप्न देखने पर तो ऐसा होना ही है।**''

किसी दिन ज्यादा मेहरबान होकर जब वो ये कहते हैं **''आज मैं घर के कामों में हाथ बटाता हूं।''** तब तो यह मानकर चलिए कि इसका अर्थ कुछ यों हो सकता है– **''आज किसी गेम, अखबार, पत्रिका या टीवी शो में मन ही नहीं कर रहा है, लिहाजा टाइम पास कुछ काम ही कर लिया जाए।''**

आपने उन्हें कितनी ही बार यह कहते सुना होगा– **''हां, मैं सुन रहा हूं।''** पर हर बार उनके कहने का यही मकसद रहा होगा– **''मुझे तुम्हारी मुहल्ले भर की इन कहानियों में कोई दिलचस्पी नहीं है, और न ही टाइम है। मुझे अभी बहुत से काम करने हैं जैसे पत्रिका पढ़ना, अखबार चाटना, पत्ते खेलना और कल के आफिस के काम और व्यवसाय के बारे में सोचना।''**

''ओह तुम तो बस इस लिबास में बहुत खूबसूरत लगोगी।'' जब जब भी आपके उनने आपसे यह कहा होगा, क्या आपने यह अंदाजा लगाया है कि उन्हें हर बार या तो जाने की जल्दी रही होगी या जाकर आने की जल्दी और वो वास्तव में यह कहना चाह रहे होंगे– **''मुझे वापस आकर जरा धंधे पानी की बाते निपटाना है यार।''**

अबकी, जब आपसे आपके वो ये कहें– **''मुझे तेरी बहुत याद आई।''** तब जरा गौर फरमाइयेगा। हो सकता है वे यह कहना चाहते हों **''यार वहां किसी काम में मन ही नहीं लग रहा था। बहुत जोर की भूख जो लग रही थी।''**

जब वे कहते हैं– **''प्रिये मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ।''** तब तो बिलकुल धोखा मत खाइये। जरा कोशिश करिए उनके हाथों से अखबार या टीवी का रिमोट छीनने की। दरअसल उनका कहना होता है– **''मैं तुम्हें अपने अखबार और टीवी जितना ही प्यार करता हूँ।''**

‘‘आओ ये काम हम मिलजुल कर करें।‘‘ जब वह यह कहें तब तो आप किसी सहायता की उम्मीद किसी हाल मत बांधिए। असल में बात यह होती है जो वह यह कहना चाहते हैं– **‘‘मैं पसारा करुंगा तो उसे समेटने के लिए तुम्हारी जरुरत तो होगी ही ना।‘‘**

‘‘मुझे किसी सहायता की जरुरत नहीं है।‘‘ जब किसी उपकरण को ठीक करने के लिए वे उतारु हो जाएं और आपके अनुरोध पर कि किसी मेकेनिक की सेवाएं लेनी बेहतर होंगीं, वे ये शब्द कहें तब यकीन मानिए कि उनका कहना होता है **‘‘जब मेरे रिपेयर की कोशिशों में यह पूरी तरह बेकार और खराब हो जाएगा तब ही मेकेनिक की सहायता लेने के बारे में सोचेंगे।‘‘**

6 व्यंग्य

(उ) ई–मेल !

हाल ही में मेरा ई–मेल पता किसी तकनीकी कारण से बदल गया और नतीजतन मुझे भेजे गए मेल भेजने वालों को खाली खाते के चेक की तरह बाउंस हो गए । आम तौर पर मैंने तो जैसे तैसे इस मार को सह लिया । परंतु इसकी मार मेरी प्रेयसी को जरा ज्यादा ही पड़ गई । उसे लगा कि मैं न जाने किस मुसीबत में फंस गया हूं या मुझे किसी और मुसीबत ने तो नहीं फांस लिया है । जहां दिन में दस बार ई–मेल के माध्यम से प्रेम संदेशों का आदान प्रदान होता हो, वहां यकायक, नयी व्यवस्था के होते तक प्रेम भरे संदेश मिलना बंद हो जाएं तो प्रेमियों के हालत का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है ।

वैसे भी ई–मेल अक्सर उई–मेल का काम ज्यादा करता है । ज्यादा पुरानी बात नहीं है, महज साल दो साल पहले जब इस निगोडी ई–मेल के अते पते नहीं थे, तो कितने मजे थे । पोस्टमेन चिट्‌ठी पत्री लेकर आता था, रंगबिरंगी लिफाफे होते थे और होती थी सुंदर हाथों से लिखी हुई चिट्‌ठियां, जिनमें अक्सर महबूब के स्पर्श की खुश्बू भी समाहित होती थी । इन पत्रों को हजार बार पढकर, छूकर और देखकर निहाल हुआ करते थे और फिर बड़ेजतन से जवाब लिखा करते थे । पोस्टमेन का इंतजार भी कितना सुहाना होता था और जब पत्र लिखते थे तो जवाब का इंतजार हप्ते भर बाद शुरू होता था । इस बीच कई शंका कुशंका – मसलन पत्र मिला या नहीं, जवाब भेजा या नहीं – के बीच जब पत्र मिलता था तो उस आनंद का कोई ठिकाना नहीं होता था । पर अब ? जनाब अब तो हालात यह हैं कि इंस्टेंट मैसेंजर और चैट जैसे ई–मेल के नये अवतारों ने तो इंतजार का मजा ही खतम कर दिया है । इधर आपने ई–मेल से कुछ भेजा नहीं, उधर दन्न से जवाब आया नहीं । ऊपर से अगर जवाब नहीं आया तो दिल मे खलबली, लिहाजा हर दस पांच मिनट में अपना

ई–मेल इनबाक्स एक्सेस किए बगैर चैन नहीं चाहे रात के बारह बजे हों । अगर आपका मेल वांछित जगह पर नहीं पंहुचा तो वह मेलर डेमन के द्वारा आपको वापस मिल जाता है । यहां तक कि कुछ ई–मेल में रीड रिक्वेस्ट के कारण भेजा गया मेल पढ़ लिया गया या नहीं यह भी पता लग जाता है । कुल मिलाकर पत्र भेजने और मिलने के इंतजार और सस्पेंस के सारे मजे का गुडगोबर । फिर हाथ से लिखे पत्रों को पढने जैसा आनंद भला कंप्यूटर के मॉनीटर पर पढने या प्रिंटर से प्रिंट किए गए पत्रों के पढने से आ सकता है ?

निगोडी ई–मेल ने सबकुछ बदल कर रख डाला । अब न तो ऐसे पत्र आते हैं, जिनमें अपने महबूब के बदन की खुश्बू का अहसास होता है, न ही उनके हाथों से लिखी गई मोती जैसे इबारतों को बार बार पढने का आनंद आता है । अब तो ई–मेल के द्वारा आया प्रेम पत्र भी किसी स्पाम मेल के जैसा भयानक होता है ।

साल दर साल, एक जैसे टाइपफेस में किया गया प्रेम का इजहार भला वो आनंद दे सकता है जो किसी सुंदर से हाथों लिखी इबारतों से मिलता है । ऊपर से ई–मेल के आगे पीछे विज्ञापन, रिमाइंडर और अन्य तकनीकी जानकारियां होती हैं, जिससे पढने वाले को अक्सर कोई लेना देना नहीं होता, इसके मजे को और भी खराब कर देते हैं । जैसे पत्र के अंत में लिखा होगा आई लव यू – सीमा । नीचे ई–मेल का सर्वर आपको चिढाता हुआ अपना विज्ञापन लिख देगा – डू यू याहू ? फिर आप चाहे कितना ही अपने ई–मेल को इनक्रिप्ट करके गुप्त बनाने की कोशिश कर लें, आपका मेल पता नहीं दुनिया के किन सर्वरों में से घूम फिर कर आता है जिससे कि इसके सार्वजनिक हो जाने का खतरा बना ही रहता है । यही नहीं, आपने एक बार किसी को मेल कर दिया, तो फिर आप नहीं जानते कि इसको इंटरनेट से मिटा पाना असंभव सा कार्य है । आपको इलहाम ही नहीं होगा कि आपका पोटेंशियली डेंजरस किस्म का ई–मेल कहां कहां किस किस कंप्यूटर में स्टोर है ।

ई–मेल को आपके पास भेजने में किसी को कोई खास खर्च नहीं करना पडता लिहाजा आपके पास रोज ऐसे सैकडों ई–मेल आ सकते हैं जिनमें किसी प्रकार की छूट या किसी प्रकार की लाटरी लगने या अन्य किसी प्रकार की कमाई करने के और अन्य धार्मिक अन्धविश्वासों के विवरण होते हैं । आपका ई–मेल पता आमतौर पर सार्वजनिक ही होता है, कोई हेकर या कोई वेब साइट आपके कंप्यूटर से आपका ई–मेल पता आसानी से हासिल कर सकता है । लिहाजा कोई भी आपको ई–मेल करने हेतु स्वतंत्र होता है और माना कि कोई आतंकवादी ही आपको ई–मेल कर दे तो फिर आप तो गए काम से । इंटरनेट के तमाम सर्वरों और प्रेषक के कंप्यूटरों में से कहीं न कहीं आपको फंसने फंसाने के तमाम सबूत मिल ही जाएंगे । फिर आप अपनी सफाई देते फिरिए ।

एक नया भय भी अब आपको सताने लगा है । अगर आप ई–मेल के यूजर नहीं हैं, आपका ई–मेल पता नहीं है, तो आपकी इस दुनिया में मौजूदगी निरर्थक है । हर कहीं कोई फार्म भरिए, या किसी से बात करिए, ई–मेल का एक कॉलम नया जुडा होता है या आपका ई–मेल पता पूछा जाता है । गोया कि यह भी कोई स्टेटस सिंबल हो । फिर आपको नए सिरे से एक छात्र जैसा बनकर इंटरनेट की पढाई करनी होती है । ई–मेल का उपयोग करने के लिए आज कल के छोकरों से तमाम उम्रदराज, दुनियादारी के जानकार लोगों को भी नसीहतें लेनी पडती हैं । भला यह भी कोई अच्छी बात है ? कलियुग की कल्पना में यह बात भी जोड़ दी जानी चाहिए।

ई–मेल से जरा बच के भी रहिए । यह आपके कंप्यूटर को जमकर बीमार कर सकता है । यह एक तथ्य है कि कंप्यूटरों में वायरस ई–मेल के द्वारा ही ज्यादा फैलते हैं । हो सकता है कि आपके महबूब के बीमार कंप्यूटर का वायरस ई–मेल के द्वारा आइ लव यू कहता हुआ आपके कंप्यूटर में घुस जाए और आपकी तमाम मेहनत पर पानी फेरता हुआ आपके डाटा को खत्म कर दे । यह बात तो और भी आश्चर्य जनक है कि अब तक समस्त संसार के कंप्यूटरों में तमाम तरह के गंभीर वायरसों को फैलने फैलाने का काम जब इस ई–मेल ने ही किया है, तब भी लोग इसे क्यों अपनाए फिर रहे हैं । क्या इस पर तत्काल प्रतिबंध नहीं लगा देना चाहिए ? मगर जब तक प्रतिबंध लगे, आप अपने उईमेल के अनुभव मुझे ईमेल अवश्य करिएगा ।

7 व्यंग्य

कंप्यूटिंग कहावतें

✓ एक प्रोग्रामर की आत्मा उसके पीसी के केबिनेट के भीतर होती है।

✓ जीवन में सबको कभी न कभी भारी शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ता है जैसे– कभी आपका कोई दोस्त आपको यह बताए कि जो नया गेम आप ट्राई कर रहे थे, वह आपके सिस्टम के ऑब्सलीट हो जाने के कारण नहीं चल सकता।

✓ एक प्रोग्रामर जो समय अपने प्रोग्राम लिखने में लगाता है, वह समय उस प्रोग्राम के उपयोग कर्ता के समझने में जुड़ जाता है।

✓ आपका पुराना पीसी और प्रोग्राम उतना बुरा कतई नहीं है, अगर आप अन्य

बातों के बारे में भी सोचें।

- ✓ जो भी ताजातरीन सिस्टम हमारे पास होता है, वह हमारी आवश्यकता पूर्ति करने में असक्षम होता है तथा जो सिस्टम हमारी आवश्यकता पूर्ति करने में सक्षम होता है, वह प्रायः औरों के पास होता है।
- ✓ आप चाहें तो इस बात का इंतजार कर सकते हैं कि आपके लिए उपयुक्त और उच्च गुणवत्ता का पीसी एक दिन बाजार में आ ही जाएगा, मगर इसका मतलब यह नहीं कि आपके भाग्य में कोई ऑब्सलीट सिस्टम नहीं होगा।
- ✓ अपने सिस्टम को अपग्रेड करने की खुशी अपने पुराने पेरीफेरल को ठिकाने लगाने में काफूर हो जाती है।
- ✓ लालच वह आग है जो हमें बेकार पेरीफेरल खरीदने को मजबूर कर देती है।
- ✓ कोई प्रोग्राम या सिस्टम परिपूर्ण नहीं हो सकता। थोड़ी सी आकुलता तो होती ही है।
- ✓ कोई भी नया पीसी लेने के पश्चात् के प्रथम तीन महीने रोमांच के होते हैं, अगले तीन महीने मजेदार होते हैं, उससे अगले तीन महीने बोझिल होते हैं, और बाद के समय में कहीं कुछ भी नहीं होता है।
- ✓ जब बत्ती बंद होती है, तो सभी कंप्यूटर एक समान होते हैं।
- ✓ बुरे उपयोग कर्ता अपने सिस्टम को रिलीज होने के दिन से पहले ही अपग्रेड करने की सोचते हैं।
- ✓ प्रोग्रामर बुरे नहीं होते– आलसी हो सकते हैं।
- ✓ किसी नर्ड से पूछें कि सौंदर्य क्या है? ... एक सिस्टम जिसमें खूब मेमोरी हो, बड़ी स्टोरेज कैपेसिटी हो, टनों प्रोग्राम लोड हों और खूब सारे पेरीफेरल लगे

हों।

- ✓ किसी व्यक्ति की पहचान उसके हार्डडिस्क में लोडेड प्रोग्रामों से होती है।
- ✓ जब आदम और हव्वा ने बुद्धि का फल चखा तो वे पत्तियों की ओर दौड़े। जब कोई नर्ड सोचने की शुरूआत करता है तो वह निकटतम टर्मिनल की ओर दौड़ता है।
- ✓ किसी प्रोग्राम को खुजाओ तो बग मिलेगा ही।
- ✓ एक उपयोगकर्ता अपने सिस्टम के प्रथम अपग्रेड को छीनता है, द्वितीय के लिए निवेदन करता है, तृतीय के लिए आदेश देता है, चतुर्थ को ले दे स्वीकारता है और फिर बाद के सभी को भुगतता है।
- ✓ एक बेवकूफ का पैसा बार बार के अपग्रेड में चला जाता है।
- ✓ एक अच्छे प्रोग्राम को लिखने के लिए बिना सोचे शुरूआत करें कि क्या लिखना है, और जो लिख लिया है, वहीं खत्म कर देना है।
- ✓ यह हास्यास्पद है कि आप अपना सारा साल एक ही पीसी पर निकाल दें। तीन सही नम्बर होगा। जी हाँ, दो हार्डवेयर और एक सॉफ्टवेयर अपग्रेड उचित होगा।
- ✓ आपका विंडो, सिस्टम क्रेश के भय के बगैर नहीं चल सकता।
- ✓ किसी प्रोग्रामर की सत्य निष्ठा तभी मानी जाएगी, जब वह एक समय में एक से ज्यादा प्रोग्राम पर कार्य न करता हो।

8 व्यंग्य

अमेरिका की बिजली – एम.पी. की बिजली

- रविशंकर श्रीवास्तव

हाल ही में अमेरिका में कई सालों बाद बिजली गुल हुई. कईयों को तो वहां पता ही नहीं था कि बिजली गुल होती भी है. कहते हैं वहां 20 – 25 साल पहले कभी बिजली ऐसी ही गुल हुई थी. बिजली गुल होने के किस्से वहां बच्चों को उनके दादा दादी और नाना नानी सुनाया करते होंगे कि बेटा एक बार ऐसा हुआ था कि बिजली गुल हो गई थी... तो ऐसा हुआ था या वैसा हुआ था और बच्चे कल्पना मात्र ही कर पाते होंगे कि जब बिजली गुल हो जाती होगी तो क्या होता होगा...क्योंकि मुई बिजली कभी गुल होती ही नहीं थी.

पर अबकी जब बिजली गुल हुई तो ऐसी हुई कि 24-36 घंटों के लिए और जो लोग कल्पना ही कर पाते थे उन्होंने इसे साक्षात न सिर्फ महसूस किया बल्कि भुगता भी. कईयों को यह भी पता चला कि उनके अपार्टमेंट के बाहर, टीवी और इंटरनेट के दीगर भी कोई दुनिया है. कई तो अपने पड़ोसियों से पहली – पहली बार ही मिले. फिर बिजली के बगैर जीना कितना मुश्किल है यह उन्हें यह भी महसूस हुआ. बिजली गुल होने पर अमेरिका के राष्ट्रपति तक को बयान देना पड़ा. शायद अमेरिका के लोगों को यह पता नहीं था कि लोग बिजली के बगैर भी जीते हैं, और बिजली कटौती तथा बिजली गुल होना तो उनके जीवन का हिस्सा है. दरअसल वे अगर समय समय पर हमारी तरह

बिजली कटौती झेलते होते तो उनके लिए यह न सिर्फ यह कम कष्ट कारी होता और न ही कोई बड़ी खबर बनती, बल्कि लोग इसे अपने आम जीवन का हिस्सा समझते.

एक मित्र जो विद्युत विभाग में कार्य करते हैं, अक्सर प्रायः सभी को अपना अनुभव किया हुआ यह वाकया सुनाया करते हैं. बात कोई दसेक साल पुरानी है. तब अपने इधर बिजली ज्यादा गुल होती नहीं थी. मित्र कहीं पर विद्युत विभाग के इंचार्ज थे. उनके इलाके में प्रशासनिक आफीसर थे जो बिहार के थे. एक दिन उन बिहारी प्रशासनिक आफीसर के बंगले की लाइन में गड़बड़ी आ गई और कुछ तकनीकी कारणों से उनके बंगले में रात भर बिजली गुल रही. सुबह जब मित्र अपना स्पस्टीकण देने उन प्रशासनिक आफीसर के पास पंहुचे और कारण बताना चालू किया तो उन्हें रोककर वह बोले- भाई यहां तो आप लोग फिर भी बहुत बिजली देते हैं. हमारे बिहार में तो बिजली कभी कभार ही मिलती है. आप तो कभी कभी ऐसे ही बिजली बंद कर दिया कीजिए ताकि कम से कम आदत तो बनी रहे और जब हम बिहार में अपने शहर में जाएं तो अटपटा न लगे.

और जब सचमुच में ही अपने इधर भी बिजली गुल होनी चालू हुई, भले ही उन बिहारी प्रशासनिक आफीसर को कोई खास फर्क महसूस नहीं हुआ होगा और शायद वे ज्यादा होमली महसूस किए होंगे, पर अधिसंख्य लोगों को तो दिन काटना और रात

बितानी भारी पड़ने लगी थी. अमेरिका में बिजली गुल हुई तो किस्से आए कि लोगों ने किस तरह इस मुसीबत से निकलने के लिए एक दूसरे की सहायता की. अपने इधर जब बिजली गुल होती है तो धरने- प्रदर्शन होते हैं, बिजली कार्यालय जलाए जाते हैं, बिजली कर्मचारियों से मारपीट की जाती है. गोया बिजली पैदा करने के ये संसाधन हों. 24-36 घंटों की तो बात ही क्या, कई ग्रामीण इलाकों में तो दिनों तक बिजली नहीं होती तो भी खबर नहीं बनती.

बहरहाल, बिजली आपको भले ही पूरी मिलती रहे, भले ही आप अमेरिका में रहते हों या अपने इधर भी अमेरिका स्टाइल की बिजली किसी कारण वश मिलने लगे, कुछ देर के लिए ही सही, आप अपनी बिजली खुद गुल करिए. कम से कम आदत तो बनी रहेगी.

रविशंकर श्रीवास्तव,
100, सुकृति, राजीव (कस्तूरबा) नगर,
रतलाम म. प्र. 457001